महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा
की पीएच0डी0 (हिन्दी) उपाधि हेतु शोध–सार

सत्यं शिवं सुन्दरम्

शोध–विषय

''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में उद्घाटित विविध पक्षः एक अध्ययन''

शोध–छात्र

राजेश कुमार पटेल

शोध–निर्देशक

प्रो. दीपेन्द्रसिंह पी.जाडेजा

हिन्दी विभाग कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,

बड़ौदा, गुजरात

शोध–सार

''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में उद्घाटित विविध पक्षः एक अध्ययन''

1. भूमिका–

आधुनिक हिन्दी साहित्य के लेखिकाओं में नासिरा शर्मा का शीर्षस्थ स्थान प्रगतिशील मानव धर्मी लेखिका के रूप में नासिरा शर्मा अपनी पहचान बनाने वाली हिन्दी महिला कथाकारों में अद्वितीय है, इनकी शोहरत राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर है। स्वतन्त्रता के बाद अपने कथा साहित्य में सामाजिक जीवन के मूल्यों के बदलते परिवेश का बड़ा ही महत्वपूर्ण चित्रण किया हे। एक मुस्लिम महिला होते हुए भी इन्होंने हिन्दी साहित्य में जो ख्याति प्राप्त की है, वे बड़े ही गौरव की बात है। वे जातिगत भेद–भाव और संकीर्णता से बहुत परे है, जो पूरी तरह मानवता वादी है। वह हर वक्त सजग रह कर हर समस्या की जड़ तक पहुँचना चाहती है, उन्होंने हमेशा नित नये मुद्दो पर खुली चर्चा की है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है इस घिसे हुये वाक्य को भी हम सही परिप्रेक्ष्य में देख सकते हैं। खासतौर जब शिद्दत से यह समझने की ललक हो कि क्या वाकई ऐसा है? मुस्लिम समाज की आईनादारी के मामले में राही मासूम रजा, शानी और अब्दुल बिस्मिल्लाह का कोई जोड़ नहीं है। ये तीनों ही मुस्लिम जीवन के भीतर मौजूद विडंबनाओं की अनेक परतों को जितनी बेरहमी से उधेड़ते हैं वह इस मायने में बेमिसाल है कि तीनों का लेखनकाल पिछली शताब्दी रही है, इसके बावजूद उनका लेखन पीछा नहीं छोड़ता। राही मासूम रजा के यहां तो एक ऐसा हाशिया है, जहां बहुत तेजी से बदलाव हो रहा है और वह बदलाव शेखों–पठानों को आसानी से पच नहीं रहा है। सिफत यह है कि उनके पांवों के नीचे की जमीन खिसक चुकी है और वे सिवा हाथ मलने के कुछ और कर भी नहीं सकते। कुछ वर्ष और पीछे का मामला होता तो वे रुपए–पैसे से मजबूत होते जा रहे इन जुलाहों पर लट्ठ बजा देते लेकिन लाहौलबिलाकूवत। अब जमाना दूसरा आ गया है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आधा गांव' के दो दृश्य इस बदलाव को बहुत मार्मिक तरीके से

व्यक्त करते हैं। जुलाहे अपनी मेहनत से तरक्की कर गए हैं और कल तक उनको अपने अर्दब में रखनेवाले शियाओं की आर्थिक और सामाजिक हैसियत दो कौड़ी की हुई जाती है। उनमें जुलाहों की लड़कियों को अब छेड़ न सकने की कसक है तो दूसरी में एक शिया साहब जूते की दुकान खोले बैठे हैं। बड़ी मुश्किल से नए हीले का ठिकाना हुआ है इसलिए कुशलता से दुकान चलाने के सिद्धांत पर चल रहे हैं। एक दिन अपने ही कुनबे के एक सज्जन को जूते की ओर आता देख उनका खून सूखा जाता है कि कहीं मियां उधरा न मांग लें। न जाने कब तक चुकाएंगे या चुकाएंगे ही नहीं। यह दिन किन दिनों को रौंदते हुये आया है इसे इस तथ्य से जाना जा सकता है कि लठैत भोला अहीर भी उनके तख्त पर नहीं बैठता। वह उस मचिया पर बैठता जो उसी के नाम से बैठक के एक कोने में रहती है। इसके साथ ही एक शेख साहब एक दलित महिला को रखे हुए हैं। वह उनके कई बच्चों की मां हो चुकी है और एक दिन निकाह के लिए कहती है तो वे उसे जूते–जूते पीटते हैं कि साली तेरी यह हिम्मत। लेकिन अब दृश्य बदल गया है। अंसारी जुलाहे पत्थर पर दूब की तरह उग आए हैं। अब उन्हें दबाना असंभव है। लेकिन दो समुदायों के बीच के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक फर्क को बहुत बारीकी से बुननेवाले राही साहब भी अंसारियों के कथाकार नहीं हैं। वे वस्तुतः शियाओं और पठानों के पतन के किस्सागो हैं। लिहाजा उनकी कथाभूमि गाजीपुर में पाकिस्तान के अलीगढ़ में जाने का चर्चा तो है लेकिन एकदम पड़ोस के जुलाहों पर बंटवारे का क्या असर होनेवाला है, इसका रत्ती भर भी जिक्र नहीं है।

नासिरा शर्मा की दृष्टि में लोग धर्म को एक हथियार के रूप में मानते हैं, जबकि सबको चलाने और जीवित रखने वाली शक्ति एक ही है, इसलिए वह कहती है कि–''धर्म केवल योजनाबद्ध तरीके से जीवन जीने का एक रास्ता है। आज धर्म को समझना हमारे लिए बेहद जरूरी हो जाता है, क्योंकि इसका गलत प्रयोग इन्सानों के जिन्दगी को बेहद दुश्वार बना रहा है।'' नासिरा शर्मा किसी सांसारिक सीमा, बंधन या नियम को नही मानती, इनके अनुसार धर्म का सीधा संबंध हदय और भावना से है, इसके लिए बाहरी दिखावा करने की आवश्यकता नहीं है। आपकी दृष्टि में संसार का सबसे बड़ा और सच्चा धर्म मानवता है, वही मानव को बुराईयों से बचाकर पवित्र जीवन जीने में सहायता प्रदान करता है, तभी वह कहती

है कि–''मैं अपने विचार और सोंच में अपना धर्म, ईमान और इन्सानियत को मानती हूँ।'' धर्म एक पवित्र भावना है, जो कभी भी एक इंसान को दूसरे इंसान से अलग नहीं करता। इन्ही स्वच्छन्द विचारों के बल पर आप सांसारिक बाधाओं के होते हुए भी समाज को एक नयी दिशा प्रदान करती है।

नासिरा शर्मा के कथा साहित्या में स्त्री, पुरूष संबंधों की प्रमुखता रहती है। इनकी कथा साहित्य में सामाजिक चेतना, मानवीय संवदेना और इंसानी जटिल प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति का दस्तावेज है। नासिरा शर्मा एक प्रखर कथा लेखिका है, जिनका सम्पूर्ण कथा साहित्य समकालीन जीवन की विडम्बनाओं पर प्रकाश डालता है।

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों 'शाल्मली', 'ठीकरे की मंगनी,' 'जिन्दा मुहावरे', 'अक्षयवट', 'बहिश्ते जहरा' में ऐसी औरतें निर्मित की है जो अपनी स्वतंत्रता के लिए स्वयं ही जूझती हैं। उनकी सोच का दायरा किसी देश व समाज से बंधा न होकर वैश्विक परिप्रेक्ष्य में पूर्णतः फैला है। उन्होंने विभिन्न देशों व समाजों की स्त्रियों एवं उनकी समस्याओं को निकट से देखने व समझने का प्रयास किया है। आज नारी की महत्वाकांक्षा, पति, बच्चे व परिवार तक सीमित न होकर समाज व राष्ट्र तक व्यापक हो गयी है। 'कुइयाँजान' में पानी के अतीत और भविष्य दोनों को दर्शाया गया है, 'जीरो रोड' उपन्यास में गली–मुहल्ला, देश–समाज और दुनिया को अपने भीतर कई–कई रंगों में देखा और महसूस किया। नासिरा शर्मा जी अपने लेखन द्वारा इन्सान की सोई चेतना व इंसानियत को झकझोर कर जगाने का प्रयास करती हैं।

नासिरा शर्मा की कहानियाँ स्त्री–पुरुष संबंधों की गहराई से पड़ताल भी करती है। वर्तमान समय में स्त्री जीवन की अनेक विडम्बनाओं और सवालों को भी उठाती है। 1971 के दशक में सारे बदलावों के बाबजूद, स्त्री की आर्थिक, सामाजिक स्थिति में कोई उत्साहजनक परिवर्तन नहीं हुआ। इस दशक के बाद भारत में नारीवादी आंदोलन की सक्रियता बढ़ी। बालिका भ्रूणहत्या, लिंगभेद, नारी स्वास्थ्य और स्त्री साक्षरता जैसे विषयों पर भी नारी आंदोलनकारी सक्रिय हुए।
हिन्दी कहानी ने भी इस तथ्य को गंभीरता से लिया। इस दशक की एक विशेष प्रवृत्ति नारी आंदोलन का नया रूप ग्रहण करना है, जिससे कहानियों में स्त्री विमर्श

केन्द्रीयता प्राप्त करने लगता है। ध्यातव्य है कि नारी नियति का चित्रण करने में कहानी लेखिकाएँ प्रमुख भूमिका निभाती है। जिसमें नासिरा शर्मा प्रमुख रूप से उभरकर सामने आती है।

2. पूर्व में किये गये शोध कार्यों का संक्षिप्त विवेचन–

समकालीन साहित्यकार लेखिका नासिरा शर्मा एकता तथा निम्न वर्गीय नारी जीवन की त्रासदी एवं संघर्ष की गहरी जाँच पड़ताल करता है। नासिरा शर्मा के कथा साहित्य को केन्द्र में रखकर कुछ कार्य हुये है और कुछ अभी जारी है किन्तु ''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में उद्घाटित विविध पक्षः एक अध्ययन ''को लेकर अभी कोई कार्य सामने नहीं आया है। शोधार्थी के प्रयास ने रचनाकार के इसी पक्ष को उजागर किया है।

नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री पुरुष संबधों की प्रमुखता है। यह संबध पति–पत्नी के अधिक हैं। यहां संबधों के बीच मर्द समाज के तथाकथित धार्मिक कानूनों की विसंगतियों से पैदा अनुगूंज है। और उनके मध्य छटपटाती नारी यंत्रणा की भयानक त्रासदियां जो स्त्री को जड़ कर रही हैं, उनमें एक आक्रोश भर रही हैं। उनकी कहानियां महज एक कथा ही नहीं अपितु तर्क पूर्ण विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत करती हैं। संग्रह की कहानी 'खुदा की वापसी', 'दिलआरा', 'पुराना कानून' इन विसंगतियों को शिद्दत से प्रस्तुत कर उनके खिलाफ तर्क सम्मत आवाज बुलंद करती हैं। इन आवाजों में कहीं भी लेखिका का स्वर सुनाई नहीं देता बल्कि प्रेमचंद के पात्रों की तरह नासिरा शर्मा की कहानियों के पात्रों के ही सम्वेत स्वर सुनाई पड़ते हैं। इस्लामिक कानूनों के तहत शादी में तय होने वाली महर या मर्दों को चार शादियों की इजाजत एवं तीन बार तलाक–तलाक–तलाक के परिणाम स्वरूप टूटते विघटित होते पारिवार एवं दाम्पत्य जीवन की भावनात्मकता भी धर्म से भोथरी होती जाती है। भले ही तलाक के कारण में महज महर की रकम को धार्मिक कानून की दुहाई देकर मर्द द्वारा स्त्री से माफ करवाना रहा हो या अन्य कोई वजह मगर एक बार तलाक हो जाने के बाद, स्त्री और पुरुष दोनों की भावनात्मक एकता में धर्म ही सबसे बड़ी बाधा बन सामने खड़ा होता है। मर्दों को मिला चार शादियों का हक भोगवादी संस्कृति के लिए भले ही माफिक हो लेकिन सामान्य जन की बर्बादी और

पारिवारिक विघटन का यह मुख्य कारण भी है। क्योंकि तलाक हो जाने पर आपसी प्रेम समाप्त हो जाय ये जरूरी नहीं। कानूनी बंधन टूटने से दिल का बंधन तो नहीं टूट जाता। निम्न और मध्य वर्ग में यह समस्याऐं बेहद विकराल रूप में सामने आती हैं। जब ऐसी स्थिति में लड़की का अपना कोई मत नहीं होता। सब कुछ ''अल्लाह की मर्जी से हो रहा है''कह कर पल्ला झाड़ा जाता है। यही समसामायिक वैज्ञानिक दृष्टिहीनता एवं अज्ञानता आध्यात्म से लगाव पैदा करती है। तब यही आध्यात्मिक लगाव जीवन को और पलायन की ओर ले जाता है। जहां लड़की निर्विकल्प हो कष्टमय जीवन जीने को विवश होती है। किन्तु खुशफहमी है कि नासिरा शर्मा की कहानियों की वह युवा लड़की पात्राऐं चाहे वे निम्न वर्ग की हों मध्यम या उच्च वर्ग की इन कारणों और समस्याओं के खिलाफ लड़ती और समाज में स्त्रियों की आदर्श बन दिशा देती नजर आती है।

स्त्री को नकारात्मक प्रतिस्पर्धा से दूर हटना होगा। वरना ईर्ष्या के दुष्परिणाम इस पूरे वर्ग को भुगतने होंगे। और स्त्री को यह समझना होगा की ईर्ष्या आदि उसके स्वाभाविक स्त्री गुण नहीं बल्कि यह सोशल कंस्ट्रक्ट हैं। जैसा कि 'सिमोन द बोउआर' ने लिखा है कि "स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती हैं।" इस रहस्य को समझना होगा। उसे स्त्री जाति के लिए किए गए दुप्रचार से परे हटना होगा। उसे 'औरत, औरत की सबसे बड़ी दुश्मन' के मुहावरे को गलत सिद्ध करना होगा। यह सच है–"औरत ने अपने संघर्ष की लम्बी यात्रा तय की है और अपनी उपलब्धियों के चलते उसने मर्दों की दुनिया में अपना स्थान भी बनाया हैं। लेकिन जो आदर दिलों में होना चाहिए वह अभी उसे हासिल नहीं हो पाया जिसका उसे गहरा रंज है और यह रंज तभी दूर होगा जब औरत दूसरी औरत की इज्जत करना सीख लेगी।"

जब तक वह एक दूसरे का सम्मान करना नहीं सीखेगी, आपसी असुरक्षा की भावना से बाहर नहीं निकलेगी वह दूसरे वर्ग का सम्मान हासिल करने में भी सक्षम नहीं होगी। सुधा सिंह ने 'ज्ञान का स्त्रीवादी पाठ' में लिखा है–"स्त्री दूसरी स्त्री को गंभीरता से नहीं सुनती। यह धारणा काम करती है कि स्त्री अच्छी वक्ता नहीं होती। उन्हें आधिकारिक भी नहीं माना जाता। लेकिन यह स्थिति स्त्री चेतना के साथ साथ थोड़ी बदली हैं। स्त्रियों ने स्त्री को अच्छी वक्ता–श्रोता मानना शुरू कर दिया हैं।

स्त्री के बोलने से, आपस में अनुभव बांटने से यह मिथ टूटता है कि पुरुष श्रेठता दैविक होती हैं।"

3. प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य और महत्व–

नासिरा शर्मा का कथा साहित्य मानवीय नियति की चुनौती को स्वीकारने, झेलने तथा त्रासदी को वर्णित करता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध उनके समग्र कथा साहित्य में निहित मान्यताओं, प्रवृत्तियों, समस्याओं तथा विसंगतियों को उद्‌घाटित करने की दिशा में एक गंभीर प्रयास है। जिससे इसकी उपयोगिता और महत्व स्वतः सिद्ध हो जाता है।

शोध के उद्‌देश्य–

- इस शोध में व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया गया है तांकि व्यक्ति का बौद्विक और सामाजिक विकास हो सके। व्यक्ति का सही मार्ग दर्शन करना ही शोध का मुख्य लक्ष्य है।
- समाज हित में बेहतर रचनात्मक कार्य करने की इच्छा और यश, धन, सम्मान और ज्ञान की प्राप्ति।
- देश में बढ़ रही पलायन वृति को दिखाते हुए उसके कारण होने वाली समस्याओं को उजागर करना।
- प्राचीन संस्कृति के स्वरुप की व्याख्या करते हुए वर्तमान में हो रहे संस्कृति संक्रमण को दिखाना।
- समाज में हो रही धार्मिक हिंसा के प्रति लोगों को जागरुक करना और इसके कारणों से लोगों को अवगत करवाना।
- राजनैतिक उद्‌देश्यों पर चर्चा करते हुए आज के राजनैतिक रूप की व्याख्या करना।
- जीवन मूल्यों के हो रहे पतन की चर्चा करना और इसकी महत्ता को स्पष्ट करना तांकि हर व्यक्ति इन मूल्यों का सही प्रयोग कर देश को प्रगति पथ पर लाने में सहायक हो सके।
- सामाजिक जड़ता को सामने लाने का प्रयास किया गया है। नारी शिक्षा को

बढ़ावा देना और लोक कल्याण की भावना विकसित करना इस शोध का मुख्य लक्ष्य है।

- आधुनिक टेक्नोलॉजी के कारण निरंतर बढ़ रही पानी की समस्या के प्रति जनता को सचेत करना तांकि व्यक्ति इसके समाधान के लिए गंभीरता से सोचकर आवश्यक कदम उठाए।

आशा है कि इस शोध से आने वाली पीढ़ी और यह समाज लाभान्वित होंगे। पाठक जब ऊपर दी गई समस्याओं पर गहराई से सोच–विचार करेगा तो निःसंदेह वह इनके समाधान और देश के विकास में अपना योगदान देगा। जिस देश का हर व्यक्ति जागरुक होगा उस देश को उन्नति करने से कोई नहीं रोक सकता। अपने देश का विकास ही इस शोध का मुख्य लक्ष्य है।

4. शोध प्रविधि या पध्दति

''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य के उद्घाटित विविध पक्ष का अध्ययन'' करने के लिए सामाजिक,राजनीतिक,वर्ग संघर्ष,साम्प्रदायिकता,मनोवैज्ञानिक, शोध परक, सर्वेक्षण परक, विश्लेषण परक तथा तुलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य को और सार्थक एवं आकर्षक बनाने के लिये भिन्न भिन्न विद्या स्थलो,पत्रिकाओं,इंटरनेट के साधनो आदि का प्रयोग किया गया है। जिससे प्रस्तुत विषय को प्रमाणिक ढंग से विश्लेषति किया गया है।

5. अध्याय विभाजन–

नासिरा शर्मा के लेखन की एक खासियत है कि वो कभी भी किसी मुद्दे की तह में जाये बगैर अपनी कलम नहीं चलाती हैं। इसके लिए चाहे उन्हें कितनी ही मुश्किलों का सामना क्यों न करना पड़े। इराक और ईरान की यात्राओं पर लिखी गई तमाम किताबों, कहानी और उपन्यासों को निःसंदेह पाठक नहीं भूले होंगे। जहाँ बम और धमाकों के बीच हालात का जायजा लेने के लिए वो वहाँ तक जाती हैं जहाँ किसी भी आम इंसान की नैसर्गिक सीमाएँ जवाब दे जाती हैं।

अतःइसी बात से प्रेरित होकर शोधार्थी ने पीएच0डी0 अनुसंधान हेतु ''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में उद्घाटित विविध पक्षः क अध्ययन''यह विषय निश्चित किया था।

अनुसंधान विषय को अध्ययन की सुविधा के लिए छः अध्यायों में विभाजित किया गया है । जिनका संक्षिप्त विवेचन निम्नाकिंत हैं–

अध्याय विवरण

''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में उद्घाटित विविध पक्षः एक अध्ययन''

अध्याय एक– नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1. जीवन परिचय एवं परिवेश
2. पारिवारिक पृष्ठभूमि
3. वैवाहिक जीवन एवं जीवन दर्शन
4. शिक्षा एवं व्यवसाय
5. पुरस्कार एवं सम्मान
6. कृतित्व परिचय

अध्याय दो–नासिरा शर्मा के उपन्यासों में उद्घाटित विविध पक्ष

1. नारी समस्या
2. समुदाय
3. जल संकट
4. पर्यावरण
5. धार्मिकता
6. सामाजिकता
7. सांस्कृतिकता
8. आर्थिकता
9. राजनीति एवं राजनैतिकता
10. साम्प्रदायिक भावना एवं एकता

अध्याय तीन–नासिरा शर्मा की कहानियों में उद्‌घाटित विविध पक्ष

1. नारी समस्या
2. समुदाय
3. धार्मिकता
4. सामाजिकता
5. सांस्कृतिकता
6. आर्थिकता
7. राजनीति एवं राजनैतिकता
8. साम्प्रदायिक भावना एवं एकता

अध्याय चार–नासिरा शर्मा के अन्य विधाओं में उद्‌घाटित विविध पक्ष

1. नारी समस्या
2. सामाजिकता
3. सांस्कृतिकता
4. धार्मिकता

5. अध्याय पाँच–नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में कथा शिल्प

1. वस्तु तत्व
2. संवाद योजना
3. औपन्यासिक संरचना
4. भाषा एवं शैली
5. उद्देश्य

अध्याय छः नासिरा शर्मा का हिन्दी साहित्य में प्रदेय एवं साक्षात्कार

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्रकाशित शोध–पत्र

1. **नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व**
2. **नासिरा शर्मा के कथा साहित्य की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपलब्धियाँ**

6. अध्याय का संक्षिप्त सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में उद्घाटित विविध पक्षः एक अध्ययन'' की पूर्णता हेतु शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है।

इन अध्यायों संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है–

प्रथम अध्याय 'नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व में उनके जीवन परिचय का विस्तार से अध्ययन किया गया है। जिसमें नासिरा शर्मा जी का जन्म, परिवार, बचपन, शिक्षा–दीक्षा, विवाह, दांपत्य जीवन, नौकरी, आदि पर प्रकाश डाला गया। तो कृतित्व के अंतर्गत नासिरा शर्मा जी के कुल 'बारह' कहानी संग्रह के नाम बताकर उनके भीतर समाविष्ट कहानियों के शीर्षक के माध्यम से उनका परिचय दिया गया है। नासिरा शर्मा के द्वारा प्रकाशित 'ग्यारह' उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया गया हैं। इसके अतिरिक्त नासिरा शर्मा जी ने रिपोर्ताज, नाटक, बालकथाएँ, लेख, आलोचना आदि गद्य विधाओं की रचना की हैं और टीव्ही सीरियल के लिए कथा, पटकथा, संवाद लेखन का कार्य किया है। पत्रिकाओं के संपादन का भी कार्य किया हैं। जिसका शीर्षकों के माध्यम से परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय 'नासिरा शर्मा के उपन्यासों में उद्घाटित विविध पक्षों के द्वारा नारी समस्या, समुदाय, जल संकट, पर्यावरण, धार्मिकता, समाजिकता, सांस्कृतिकता, आर्थिकता, राजनीति एवं राजनैतिकता तथा साम्प्रदायिक भावना एवं एकता आदि समस्याओं का विश्लेषण किया गया हैं। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में समाज पर पड़ते प्रभाव को विभाजन, सांप्रदायिकता, आंतकवाद, नौकरशाही आदि उपमुद्दों के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं।

तृतीय अध्याय नासिरा शर्मा की कहानियों में उद्घाटित विविध पक्षों के द्वारा नारी समस्या, समुदाय, जल संकट, पर्यावरण, धार्मिकता, समाजिकता, सांस्कृतिकता, आर्थिकता, राजनीति एवं राजनैतिकता तथा साम्प्रदायिक भावना एवं एकता आदि समस्याओं का विश्लेषण किया गया हैं। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में समाज पर पड़ते प्रभाव को विभाजन, सांप्रदायिकता, आंतकवाद, नौकरशाही आदि उपमुद्दों के

आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं। धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं में सांप्रदायिकता, रुढ़ि–परंपरा, अंधविश्वास आदि उपमुद्दों को नासिरा जी के कहानियों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया गया हैं।

चतुर्थ अध्याय में नासिरा शर्मा के अन्य विधाओं में उद्घाटित विविध पक्ष से सम्बन्धित नारी समस्या, सामाजिकता, सांस्कृतिकता तथा धार्मिकता के माध्यम से स्पष्ट किया गया हैं।

पंचम अध्याय 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य की भाषा–शैली' में भाषा के महत्व को बताकर कथा साहित्य में प्रयुक्त शब्द भंडार, लोकोक्तियाँ, मुहावरों, कहावतों, उपमान, विशेषण, गालियाँ, काव्यात्मक भाषा आदि पर प्रकाश डालकर वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, चित्रात्मक, फ्लैश बैक, मनोविश्लेषनात्मक, पत्रात्मक, व्यंग्यात्मक, आदि शैलियों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं।

षष्ठ अध्याय 'नासिरा शर्मा का हिन्दी साहित्य में प्रदेय एवं साक्षात्कार से लेखिका के साहित्य में योगदान, स्वरूप एवं महत्व को बताते हुये विविध भूमिकाओं का वर्णन किया गया है। इस अध्याय के अन्तर्गत उनकी उपलब्धियों एवं योगदान तथा मेरे द्वारा लिए गये साक्षात्कर का वर्णन भी किया गया है।

अंत में 'उपसंहार' में सभी अध्यायों का सारांश प्रस्तुत किया गया है और पूरे अनुसंधान के दौरान आए अनुभव के आधार पर वर्तमान समाज की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए सकारात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है तथा सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध का निचोड़ प्रस्तुत करते हुये शोध की उपादेयता को स्पष्ट किया गया है।

शोध प्रबन्ध को पूर्ण रूप प्रदान करने के लिये अनुक्रमणिका के अन्तर्गत शोधकर्ता द्वारा सहायक ग्रन्थ, कोश ग्रन्थ और पत्र–पत्रिकाओं का वर्णन किया है। जिनका उपयोग शोधकर्ता ने अपने शोध प्रबन्ध में सहायक के रूप में किया है।

7. नासिरा शर्मा के कथा साहित्य का समग्र प्रभाव–

नासिरा शर्मा के संपूर्ण कथा–साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् उनके जीवन और साहित्य से सम्बन्धित कई घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। नासिरा शर्मा संभवतः पहली ऐसी बौद्धिक हिंदी लेखिका हैं, जो रचना के साथ विचार के स्तर पर भी काफी सक्रिय है। इसका भारतीय ही नहीं, बल्कि दूसरे

एशियाई मुल्कों खासकर मुस्लिम देशों की संस्कृति, समाज और राजनीति पर गहरी पकड़ है, उन्हें इन विषयों का विशेषज्ञ भी माना जाता है। इन देशों के साहित्य, राजनीति, परिवेश और बौद्धिक हलचलों पर उन्होंने पर्याप्त विमर्श और नियमित लेखन किया है।

नासिरा शर्मा अद्भुत व्यक्तित्व एवं बहुआयामी कृतित्व की धनी हैं। वे एक मुस्लिम शिया परिवार में जन्मीं। उनके पिता शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित थे तथा साहित्यिक वातावरण उन्हें विरासत में मिला। बचपन से ही उन्हें साहित्य में रुचि थी। अपने परिवार के रुतबे की वजह से उन्हें जो स्पेशल अटेंशन दी जाती, वो उन्हें पसंद नहीं थी। वह स्वयं अपनी पहचान बनाना चाहती थीं। मुस्लिम परिवार में होते हुए हिंदू ब्राह्मण प्रो0 रामचंद्र शर्मा से विवाह किया और नासिरा अली से नासिरा शर्मा बन गयीं। सुदृढ़ साहित्यिक पृष्ठभूमि वाले नगर इलाहाबाद से आयीं नासिरा शर्मा ने यों तो फारसी भाषा साहित्य में परास्नातक (एम0ए0) किया है, हिंदू, उर्दू, अंग्रेजी और पश्तो भाषा वे बखूबी जानती हैं। पड़ोसी देशों का अध्ययन उनका पसंदीदा विषय रहा है। विशेषतः ईरानी, समाज, साहित्य, राजनीति कला एवं संस्कृति पर उनकी पकड़ बहुत गहरी है। ईरान के साथ–साथ ईराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, फिलीस्तीन, इजरायल, युगाण्डा, इत्यादि देशों में हो रही विभिन्न अमानवीय घटनाओं का वर्णन भी अपने साहित्य में किया है। इन्होंने बड़े ही परिश्रम और लगन से अलग–अलग देशों के संस्कृति और साहित्य का अध्ययन किया और फिर अपने कथा का विषय बनाया। कथालेखन में तो इन्हें महारथ हासिल है। साथ ही साथ संपादन और पत्रकारिता का कार्य भी करती है। अनुवाद के क्षेत्र में भी उनका विशेष कार्य है।

नासिरा शर्मा की सोच पूरे भारतवर्ष पर लागू होती है। वह संपूर्णतया में, वैविध्य में जीने की चाह रखती हैं। वह एक ऐसे समाज की कल्पना करती हैं, जिसमें मानवता पूर्ण स्वतन्त्रता, आकांक्षा के साथ जी सके। वह भारत, जिसमें भाषाओं का, धर्म का, सांस्कृतिक गतिविधियों का, राजनीति, वर्ण और ऋतुओं का वैविध्य एवं अनेकता है, उसमें रहने वाला मानव उतना ही संकीर्ण भयाक्रान्त है। यदि इससे वह मुक्त हो सके, मानवतावादी दृष्टि अपनाये तो एक बेहतर समाज का बेहतर जीवन पाने में कामयाब हो सकेगा।

नासिरा शर्मा का कथा–साहित्य वर्तमान एवं गतिशील जीवन का लेखा–जोखा है। इनकी कहानियाँ और उपन्यास दोनों ही देश–विदेश की विषयवस्तु को समेटे हुए हैं। इन्होंने मानवीय संघर्ष, मनुष्ता की पीड़ा, मानवाधिकार, इत्यादि को अपनी संवेदनशील दृष्टि द्वारा चित्रित किया है। अपने समय के प्रति लगातार सोचना तथा उसके प्रति एक सजग लेखिका के तौर पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने का बौद्धिक अंदाज नासिरा शर्मा के लेखन का केन्द्रीय पक्ष है। उन्होंने देखे, भोगे तथ्यों को व्यवस्थित करके उसे विविध परिदृश्यों, घटनाओं, जीवन स्थितियों तथा चरित्रों द्वारा प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि इनके लेखन का पैटर्न दूसरों से भिन्न है और हिंदी कथा–साहित्य में जिसकी एक अलग पहचान है।

नासिरा शर्मा का कथा–साहित्य स्व की आकांक्षा और स्वतंत्र चुनाव का खतरा उठाकर समकालीन समय संदर्भों को बेनकाब करने का सशक्त आईना है। यह साहित्य अपने वैविध्य में सुलगते सवाल लिए है। वे सवाल जो परिवर्तन के स्वीकार से उपजते हैं और अन्तर्विरोधों में अपने वजूद को ढूँढ़ते हैं, इसीलिए वहाँ देश और काल अपनी प्राणवत्ता के साथ धड़कते हैं। परंपराओं और परिवर्तनों से रगड़ खाते हुए उनका साहित्य मानव मन के सत्य का अन्वेषण है। उपन्यास, कहानी, चिंतन–मंथन, शोध, सर्वेक्षण वगैरह जो भी विधा हो एक बगावती तेवर, एक आक्रोश और एक जिद जैसे अर्न्तवर्ती आँच की तरह पाठक को लगातार तपिश देती है। नासिरा शर्मा की रचनाओं का कैनवास बहुत बड़ा है। वे महिला होने के नाते, केवल स्त्री–विमर्श की परिधि में नहीं बँधी है, बल्कि संकीर्ण गलियारों से निकलकर विश्वजनीन समस्याओं के चेहरे पढ़ती है। एक खोजी पत्रकार न केवल साम्राज्यवादी तेवर, पूँजीवादी व्यवस्था की साजिशों और औद्योगिक दौड़ में शामिल देशों की नब्ज पर हाथ रखती है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक खोखलेपन की जड़ों पर भी प्रहार करती है। समाज के हर वर्ग के प्रति गहरी और सूक्ष्म संवेदना और आमजन के सुख–दुःख से जुड़ी उनकी कलम साहित्यिक प्रतिबद्धता के रूप में अपना दायित्व निभाती है। हिंदू–मुस्लिम परिवेश और संस्कृति जैसे नाजुक क्षेत्रों से निकलकर वे व्यक्तिमन और उसके अधिकारों के प्रति भी सचेत हैं, साथ ही अपने इलाहाबाद, दिल्ली से निकलकर वे ईरान, इराक, अफगानिस्तान, दुबई और अन्य मुस्लिम देशों की अन्तर्वर्ती स्थितियों को भी खंगालती है।

नासिरा शर्मा के लेखन की एक खासियत है कि वो कभी भी किसी मुद्दे की तह में जाये बगैर अपनी कलम नहीं चलाती हैं। इसके लिए चाहे उन्हें कितनी ही मुश्किलों का सामना क्यों न करना पड़े। इराक और ईरान की यात्राओं पर लिखी गई तमाम किताबों, कहानी और उपन्यासों को निःसंदेह पाठक नहीं भूले होंगे। जहाँ बम और धमाकों के बीच हालात का जायजा लेने के लिए वो वहाँ तक जाती हैं जहाँ किसी भी आम इंसान की नैसर्गिक सीमाएँ जवाब दे जाती हैं।

नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य में अतीत का गौरव है, वर्तमान का सही मार्गदर्शन और भविष्य को उज्ज्वल और संपन्न बनाने की चेष्टा भी है। वह उन रचनाकारों में से हैं, जो अपने दायित्व को जानते और मानते हैं। सस्ती लोकप्रियता के लिए उन्होंने कभी अपनी शालीनता एवं ईमानदारी पर आँच नहीं आने दी है, न ही घटिया समझौता किया है। वे कर्त्तव्य के प्रति सजग और लेखनी के प्रति वफादार रही हैं। उन्होंने साहित्यिक यात्रा में कहानी, उपन्यास, अनुवाद, समीक्षा, वैचारिक लेख आदि में सफल लेखन किया है। उनका साहित्य अनुभूति से ओत–प्रोत होने के कारण उसमें सरसता है। सकारात्मक दृष्टिकोण काम के प्रति निष्ठा और ईमानदारी आदि से उन्होंने अपनी साहित्य साधना में सफलता पाई है।

नासिरा शर्मा ने हिंदी कथा–साहित्य के क्षेत्र में 'बुतखाना' कहानी से प्रवेश किया। 'बुतखाना' कहानी बहुत सराही गई और उसके बाद उनके कई कथा–संग्रह और उपन्यास आये, जिनमें स्त्री–विमर्श से लेकर देश–विदेश की विभिन्न समस्याओं पर विचार हुआ। नासिरा शर्मा आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य में एक प्रखर लेखिका के रूप में हमारे समक्ष आयीं। इनकी कहानियों में सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना के नये आयाम प्रस्तुत करती है। इनके कथा–साहित्य में वैविध्य है। इनके गद्य की गंभीरता, संवेदना के धरातल पर समाज को प्रिय और एकता का संदेश देती है। उनके कई उपन्यास नारी प्रधान हैं।

इनके उपन्यासों में स्त्री–पुरुष सम्बन्धों, पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की दशा–दुर्दशा, स्त्री–विमर्श का ईमानदारी पूर्वक चित्रण किया गया है। उपन्यासों में विद्रोह की एक परंपरा भी विकसित होती है, जिसका उद्देश्य है एक व्यवस्था की स्थापना, जो पूर्ण रूप से पुरुष प्रधान न हो। स्त्री–पुरुष की समान भागीदारी हो। किसी का किसी पर वर्चस्व न हो। आजादी की सुबह हो समाज में और इस सुबह

की लालिमा से ओतप्रोत हो। हमारा समाज तथा प्रकृति प्रदत्त इंसानियत की खुशबू से सुभाषित हो सकेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु नासिरा शर्मा का उपन्यास साहित्य महिलाओं में नई शक्ति, ललक और हिम्मत भरने की क्षमता भी रखता है।

नासिरा शर्मा अपने उपन्यासों द्वारा जीवन की गहन त्रासदी का सूक्ष्मता से वर्णन करती हैं। असमानता, अराजकता और शोषण आज इंसानी रिश्तों को कमजोर बना रहे हैं। नासिरा शर्मा का अदम्य विश्वास है कि यदि व्यक्ति मानवीय संवेदना को जीवित रखें, तो वह हर परिस्थिति में विजय प्राप्त कर सकता है। इंसान सिर्फ व्यक्तिगत दुःखों में ना उलझकर संपूर्ण संसार के दुःखों का अनुभव करे और लेखक की लेखनी में इतनी ताकत हो कि वह हर किसी का दुःख उतनी ही गहराई से व्यक्त कर सके।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों की भाषा साहित्य के धरातल पर उपयुक्त सिद्ध हुई है। इन्होंने उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, हिंदी सभी भाषाओं का प्रयोग अपने उपन्यासों में किया हुआ है। कहीं–कहीं पर काव्यात्मक भाषा, क्षेत्रीय भाषा भी देखने को मिलती है। इनके उपन्यासों की भाषा इतनी रोचक एवं सरल है कि बार–बार पढ़ने के बाद भी जी नहीं भरता। इन्होंने मुस्लिम, ईरानी परिवेश का जो चित्र हमारे सामने उकेरा है, वह पाठक के लिए बिल्कुल नया और अविश्वसनीय है। मुस्लिम शिया परिवार से होते हुए हिंदू बाह्मण से विवाह कर और एक सफल सुखद वैवाहिक जीवन निर्वाह कर हमारे सामने एक आदर्श प्रस्तुत करती हैं, नासिरा शर्मा। मुस्लिम समाज के प्रति जिन लोगों ने अपनी सोच का दायरा तंग कर रखा था, वो लोग इनके उपन्यासों को पढ़कर मुसलमानों के प्रति अपनी सोच जरूर बदलेंगे। नासिरा के उपन्यासों को पढ़कर यह अहसास हुए बिना नहीं रहता कि उनका मुस्लिम जीवन के, विशेषकर मुस्लिम नारियों के जीवन के यथार्थ का प्रामाणिक अनुभव है। सचमुच नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नयापन और मुस्लिम परिवेश से जुड़ी नारी–संवेदना की ताजगी है। नासिरा शर्मा के उपन्यास लेखन में शब्दों का उपन्यास नहीं होता है। वाक्यों की बनावट और बुनावट उनकी अपनी है। शब्द प्रयोगों की चातुरी से उनकी भाषा जानदार, शानदार और धारदार बन गई है। यह विशिष्टता उन्हें अपने समकालीनों से अलग करती है। इनके उपन्यासों में एक ओर तो इंन्द्रधनुषी रंगत है, दूसरी ओर पाठकों के मन को अपनी ओर खींचने की ऊर्जा है।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों के स्त्री–पात्र अपनी विपरीत परिस्थितियों से जूझकर अपना लक्ष्य स्वयं अर्जित करना चाहते हैं। उनके ये पात्र शिक्षित और अशिक्षित दोनों परिवेश से हैं। नासिरा शर्मा ने भी अपने उपन्यासों की रचनाओं में अलग–अलग भावबोधों का प्रयोग किया है। 'शाल्मली' उपन्यास का भावबोध पतिपरायण महिला की त्रासदी है, तो 'ठीकरे की मँगनी' एक ऐसी स्त्री का जीवन संघर्ष है, जो अपने व्यक्तिगत सुखों से ऊपर उठकर समष्टिगत हित के लिए अपना जीवन समर्पित करती है। 'सात नदियाँ एक समंदर' की तैय्यबा देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देती है। 'जिंदा मुहावरे' में बँटवारे की त्रासदी को झेलते हुए अपनों से दूर हो जाने का दुःख बयान करती है। 'जीरो रोड' का सिद्धान्त, नासिरा शर्मा की कलम से सिरजा हुआ महत्त्वपूर्ण पात्र है। 'अक्षयवट' उपन्यास की भावबोध की बात की जाये, तो युवा पीढ़ी जो बेरोजगारी, भ्रष्टाचार से ग्रस्त है उसके प्रति विद्रोह है। हिंदी के स्वातन्त्रयोत्तर उपन्यास साहित्य में विशेष रूप से चिह्नित–रेखांकित करते हुए अनेक कोणों से प्रक्षेपित किया गया है। 'कुइयाँजान' में सामाजिक भावबोध की त्रासदी है। इस तरह नासिरा ने अपने भावबोध को प्रकट करने के लिए विभिन्न उपन्यासों की रचना की है।

नासिरा शर्मा जीवन की मार्मिक अनुभूतियों की कथा लेखिका हैं। जहाँ आदमी और उसकी आदमियत है, वहाँ जिंदगी और उसका मर्म है। मर्म का आलेखन रचना को मार्मिक और जीवंत बनाता है। लेखन में सजगता और सतक्रता ही उसे सर्वप्रिय बनाती है। 'पारिजात' जो हुसैनी ब्राह्मण और अवध की गंगा–जमुनी संस्कृति को दर्शाता इंसानी रिश्तों की महिमा का बयान करता है।

नासिरा शर्मा ने मानवीय सम्बन्धों की समय और समाज के संदर्भ में जाँच–पड़ताल की है। उन्होंने यह सब प्रस्तावित किया है कि समाज कहीं का भी हो, उसमें जीवित लोग पहले अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हैं और फिर बड़े इंसानी सरोकारों को बचाने के लिए लड़ते हैं। उनके कहानी संग्रहों पत्थरगली, शामी कागज और इब्ने मरियम की कहानियाँ ईरान और भारत की संस्कृति, राजनीति और जीवन को इन्हीं प्रसंगों में व्यक्त करती हैं। नासिरा शर्मा, संस्कृति के इतिहास और वर्तमान के बीच में उभरने वाले फर्क को ऐसी सजग भाषा में प्रस्तुत करती हैं कि कहानियों के अदृश्य पात्र भी पाठक को संवेदना का हिस्सा बन जाते

हैं। नासिरा शर्मा ने मनुष्य की संवेदनशीलता के साथ–साथ इसमें छुपे हुए हैवान को भी पहचाना है। इस संघर्ष में 'खुदा की वापसी', 'संगसार', 'शबीना के चालीस चोर' जैसे संग्रहों की कहानियाँ अहम हैं, ये कहानियाँ बताती हैं कि इंसान से शैतान के बीच के लम्हे में मनुष्य का कायान्तरण नहीं होता, उसका मानसिक धरातल और यहाँ तक कि रुह भी बदल जाती है। नासिरा शर्मा ने मनुष्यों के चारित्रिक पतन को कई धरातलों पर परखा है, राजनैतिक शक्तियाँ सत्ता हथियाने के लिए हैवान बन जाती हैं। नासिरा शर्मा ने ऐसी कहानियाँ भी लिखी हैं जो विषयवस्तु की दृष्टि से कविता के नजदीक हैं। 'बुतखाना', 'दूसरा ताजमहल' और 'इंसानी नस्ल' संग्रहों की कहानियाँ सूक्ष्मता से इंसान की जाँच करती हैं। उनकी कहानियों की भाषा में जादू है। उनकी हिंदी, उर्दू, अरबी–फारसी और क्षेत्रीय संस्पर्श वाली भाषा की रवानी अपनी संपूर्ण खूबसूरती से पाठक को बाँधे रखती है। भाषा की परिपक्वता, मिठास और सादगी गहरे तक मन को छूती है। उनकी खामोश निगाहों में एक भेदक शक्ति है। मगर एक तपन भी। हर गलत के प्रति, हर अन्याय के प्रति, दुनियावी रीति–रिवाजों के कट्टरपन के प्रति उनकी आँखों में विरोध की एक लौ जलती प्रतीत होती है।

नासिरा शर्मा की कहानियाँ समाज में व्याप्त धर्म, जाति, संप्रदाय, आदि की दीवारों को तोड़ती है। इन कहानियों में प्रेम का एक निर्मल संसार भी देखने को मिलता है। प्रेम का यह संसार दाम्पत्य जीवन का प्रेम भी है, जहाँ अलग–अलग धर्म के स्त्री–पुरुष, पति–पत्नी का सम्बन्ध स्वीकार करते हैं। उनकी कहानियाँ नए विषय को लेकर सामने आती है और सोचने के लिए मजबूर करती है। उन्होंने अपनी कहानियों में मुस्लिम समाज की रूढ़िगत परम्पराओं को प्रस्तुत करते हुए ज्यादा जोर मुस्लिम महिलाओं से संबंधित सवालों पर दिया है। लेखिका ने भौगोलिक सीमा का बंधन तोड़कर ईरान के क्रांतिकाल की मानवीय पीड़ा का चित्रण करते हुए अपनी लेखनी द्वारा सात समंदर पार के लोगों के दर्द को वाणी दी है। उनके कहानी लेखन का फलक देश और विदेश की असीमित परिधियों में फैला है। वे अपनी कहानियों द्वारा धार्मिक एवं सामाजिक रूढ़ियों का खण्डन करने हेतु समाज जागृति का आह्वान करती हैं। कहानियों से कहीं–कहीं आक्रोश के स्वर भी उभरे हैं, किन्तु यह आक्रोश प्रायः मजबूरी में डूब गया है। कथोपकथन की दृष्टि

से उनकी कहानियाँ सफल सिद्ध हुई हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ कथोपकथन प्रधान हैं। संवादों की सुंदर व्यंजना उनकी विशेषता रही हैं।

संवादों का सफल प्रयोग एवं पात्रानुरूप संवादों के कारण कहानियों में आकर्षकता एवं धाराप्रवाहता आ गई है। संवादों के माध्यम से उन्होंने कथा का विकास किया है। नासिरा शर्मा की अपनी एक अलग स्वाभाविक और सहज हिंदी है। फारसी और अरबी शब्दों का प्रयोग बहुलता से हुआ है। अतः उनकी कहानियों की भाषा जिसमें उर्दू–अरबी–फारसी की मिठास है। उन्होंने लोकोक्तियों, मुहावरे और कहावतों के साथ–साथ उपमान और बिंबों का बहुलता से प्रयोग किया है। शैली पर भी उनका विशेष अधिकार रहा है। कहानियों में व्यंग्यात्मक, आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, चित्रात्मक और पात्रात्मक शैलियों के साथ ही प्रतीकात्मक शैली का भी प्रयोग कुशलता के साथ किया है।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों की विषयवस्तु पर चर्चा करते हुए हमें कुछ निष्कर्ष भी प्राप्त हुए। इन विषयों में मात्र जीवन की समस्याएँ नहीं, अपितु देश की विभिन्न समस्याएँ चित्रित की गई हैं। कई बार ऐसा जान पड़ता है कि नासिरा शर्मा ने मानो कोई सर्वेक्षण किया है और तत्पश्चात् उसका विवेचन किया है। कई बार तो वे उस जगह का जहाँ कथा आश्रय लेती है, का इतिहास–भूगोल बनाती हैं। इस प्रकार कथा सिर्फ कथा न रहकर कई जानकारियों का केन्द्र बन जाती है। नासिरा शर्मा की कहानियाँ और उपन्यास दोनों का शिल्पगत विश्लेषण अलग–अलग किया गया है। विषयानुसार इनकी शैली में विविधताएँ हैं। नासिरा की ये रचनाएँ किसी उद्देश्य को साथ लेकर चलती हैं। अतः समाज को संदेश देने का कार्य भी करती हैं।

नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य की शैली मुख्यतः वर्णनात्मक रही है, पर कभी–कभी यह आत्मकथ्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक भी बन गई है। उन्होंने अपने कथा–साहित्य में सामाजिक समस्याओं को भी उठाया है तथा पारिवारिक समस्याएँ, स्त्री–पुरुष सम्बन्धों की समस्याएँ भी नजर आती हैं। इनके कथा–साहित्य में स्त्रियाँ आत्मनिर्भर भी हैं और कहीं–कहीं पुरुष सत्तात्मक समाज के द्वारा पीड़ित भी हैं। नासिरा शर्मा का सामाजिक विषयों पर लिखा गया साहित्य उन्हें परंपरावादी जकड़न से बाहर निकालकर समाज को नई दिशा दिखाता है।

नासिरा शर्मा स्वयं नारी होने के कारण अपने कथा–साहित्य के नारी पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत कर पाने में अधिक सफल रही हैं। वस्तुतः नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य के नारी पात्र विभिन्न भारतीय परिवेश एवं मुस्लिम देशों के परिवेश के सामाजिक सोच और मानसिकता का कुशलतापूर्वक प्रतिनिधित्व करती है।

नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य में स्त्री की भावनाओं और संवेदनाओं का इस प्रकार मार्मिक चित्रण हुआ है कि पाठक उनकी कथाओं में स्वयं की झलक देखता है। नारी की भावनाओं की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति से नासिरा ने मुस्लिम समाज में उत्पन्न नारी के अस्तित्व को अस्मिता प्रदान की और जीवन की तमाम जटिलताओं के वर्णनने उनकी लेखनी की भाषा का संस्कार दिया। उनकी कुछ कहानियों की पृष्ठभूमि में स्त्री की न केवल छाया रही बल्कि मुख्यतः मुस्लिम नारी एक प्रतिबिंब के रूप में नजर आती है। उपन्यासों में घटनाओं को साथ लेकर, किरदारों के भीतरी और बाहरी जीवन को दर्शाती हुई जीवन के निहित पहलुओं को उजागर करती है। नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य का दायरा इतना विस्तृत, असीम और इतना अधिक आयाम वाला है कि साहित्य की कोई विधा इनसे अछूती नहीं रह सकती।

8. निष्कर्ष–

नासिरा शर्मा ने अपने कथा–साहित्य में आर्थिक समस्याओं को उठाते हुए भुखमरी, बेरोजगारी, गरीबी, कुपोषण जैसी समस्याओं से निपटना अत्यन्त आवश्यक बताया है। युवाओं को रोजगार के अवसर मुहैया करवाना देश के नेताओं का कर्तव्य है। उन्होंने राजनीति और धर्म के पाटों में पिसती इंसानी जिंदगियों के चित्र उकेरे हैं। तीज–त्यौहारों के बारे में लिखते हुए नासिरा शर्मा धार्मिक संस्कारों और रीति–रिवाजों का विस्तृत वर्णन करती हैं। विदेशी पृष्ठभूमि पर लिखे गये कथा–साहित्य के द्वारा वहाँ की सभ्यता और संस्कृति का वर्णन कुशलता से करती हैं। विदेशी तौर–तरीके और रीति–रिवाजों से परिचित कराती हैं। विदेशी परिवारों के साथ–साथ हिंदू–मुस्लिम परिवारों का वर्णन करती है। ग्रामीण और शहरी जीवन, संयुक्त और सकल परिवारों की अपनी–अपनी अलग समस्याएँ हैं, जिसका वे कुशलता से चित्रण करती हैं। लेखिका ने समस्याओं का चित्रण करते समय किसी

एक वर्ग या समाज की समस्याओं को स्थान न देकर वर्ग भेद की दूरी मिटाने का प्रयास करते हुए 'सर्वधर्म समभाव' पर विश्वास प्रकट किया है। हर वर्ग, प्रान्त, देश की समस्या, अलग–अलग होने के कारण उनका समाधान भी अलग तरह से किया है। कई बार सिर्फ समस्या का जिक्र करते हुए समाधान ढूँढ़ने की जिम्मेदारी उन्होंने पाठकों पर छोड़ दी है। प्रतिनिधि रूप में उनके साहित्य में गाँव की समस्या से लेकर अंतर्राष्ट्रीय समस्या तक का उल्लेख मिलता है और इसमें काफी विविधता दिखाई देती है। इस प्रकार जाति, धर्म, प्रान्त, राष्ट्र इत्यादि सीमाओं से कहीं ऊपर उठकर उनका साहित्य पर विश्वास है और विश्व एकता की मिसाल कायम करता है। आज की समाज व्यवस्था में इस प्रकार की विचारधारा का साहित्यिक होना सचमुच गर्व की बात है।

नासिरा शर्मा ने अनुभूतिजन्य साहित्य का सृजन किया है। उनका साहित्य आदर्श विचारों का संवाहक प्रतीत होता है। उन्होंने साहित्य में परंपरा और आधुनिकता का समन्वय स्थापित करने का अनूठा प्रयास किया है। नासिरा शर्मा कथा साहित्य में निम्न वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक के जनजीवन का सशक्त चित्रण मिलता है। उनके साहित्य के पात्र सदैव संघर्षरत दिखाई देते हैं। उनके समग्र साहित्य का प्रमुख उद्देश्य नारी जीवन का चित्रण एवं समस्याओं का उद्घाटन रहा है। नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य को तत्वों की कसौटी पर परखने पर यह स्पष्ट होता है कि इनमें संरचना, कलात्मकता, मौलिकता, ताजगी, आदि का अनूठा संगम हुआ है।

मैं अपने इस महत्वाकांक्षी शोध प्रबंध को कभी पूर्णता तक न पहुंचा पाता यदि गुरुजनों एवं परिजनों का आशीर्वाद और स्नेह का संबल कदम कदम पर मेरे साथ ना होता। मेरे शोध निर्देशेक आदरणीय प्रो० दीपेंद्रसिंह पी० जडेजा, प्रो० लता सुमंत एवं विभागाध्यक्ष आदरणीय प्रो० कल्पना गवली का मार्गदर्शन, उत्सावर्धन व सुझाव मिला इनके आशीषों की छाया निरंतर मेरे साथ रही है जिनके कारण मैंने यह असंभव सा कार्य संभव व पूर्ण कर पाया

9 .शोध सस्थांन एवं पुस्तकालय

1-महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ोदरा, हंसा मेहता पुस्तकालय

2-हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज पुस्तकालय

10 .संदर्भ ग्रन्थ सूची–

आधार ग्रंथ

नासिरा शर्मा के उपन्यास

- सात नदियाँ एक समंदर, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण–2013
- शाल्मली, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी
- मार्ग नई दिल्ली–110002, संस्करण–2012
- ठीकरे की मँगनी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013
- जिंदा मुहावरे, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–2012
- अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
- नयी दिल्ली–110003, संस्करण–2013
- कुइयाँजान, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013
- जीरो रोड, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी
- रोड, नयी दिल्ली–110003, संस्करण–2013
- पारिजात, किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–2017

नासिरा शर्मा के कहानी–संग्रह

- शामी कागज, सत्साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1997
- पत्थर गली, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, संस्करण–1986
- संगसार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1993
- इब्नेमरियम, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011
- सबीना के चालीस चोर, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011
- खुदा की वापसी, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली–110003, संस्करण–2013

- इंसानी नस्ल, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, संस्करण–2015
- दूसरा ताजमहल, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2015
- बुतखाना, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद, संस्करण–2015

नासिरा शर्मा की अन्य रचनाएँ

- जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण–2013
- राष्ट्र और मुसलमान, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011
- औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015
- दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015
- शीर्ष कहानियाँ, रचना प्रकाशन, जयपुर, संस्करण–2015

संदर्भ ग्रंथ

- अग्रवाल, बिन्दु हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0, अंसारी रोड, नयी दिल्ली।
- अग्रवाल, रोहिणी–समकालीन कथा–साहित्य, सरहदें और सरोकार, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा, संस्करण–2013
- अग्रवाल, रोहिणी–स्त्री लेखनः स्वप्न और संकल्प, राजकमल प्रकाशन, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली। 2011
- अहमद, एम0 फीरोज (संपादक)–नासिरा शर्माः एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, 3320–21, जटवाड़ा, दरियागंज, एन0 एस0 मार्ग, नयी दिल्ली–110002, संस्करण– 2016
- उपाध्याय, करुणा शंकर–अवाँ विमर्श, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण–2009
- कृष्णकांत, सुमन–इक्कीसवीं सदी की ओर, राजकमल प्रकाशन, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली। 2001
- खेतान, प्रभा (अनु0)–स्त्रीः उपेक्षिता (सीमोन द बोउवार के 'द सेकण्ड सेक्स' का

अनुवाद), हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

- गजभिए, ज्योति–समकालीन लेखिका नासिरा शर्मा का कथा–साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2006
- गुप्त, ज्ञानचन्द–आँचलिक उपन्यास, अनुभव और दृष्टि, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग नई दिल्ली–110002, संस्करण–2009
- गुप्ता, रमणिका (संपादक)–आधुनिक महिला लेखन, नवलेखन प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2009
- गुप्ता, रमणिका–स्त्री विमर्श, कमल और कुदाल, शिल्पायन प्रकाशन, संस्करण–2006
- गुप्ता, डॉ0 आशा–नवम दशक के हिन्दी महिला कथाकारों की नारी चेतना, कान्त पब्लिकेशन्स, चन्द्रलोक एनक्लेव, दिल्ली। 2001
- ग्रीयर, जर्मन–विद्रोही स्त्री (अनु0–मधु बी0 जोशी), राजकमल प्रकाषन प्रा0 लि0 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली। 2001
- चन्देल, रूपसिंह–अपराध समस्याएँ और समाधान, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली–31, संस्करण–1983
- चौबे, देवेन्द्र–समकालीन कहानी का समाजशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, संस्करण–2009
- चंद्र, कृष्ण कुमार–साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2009
- जैन, अरविन्द–स्त्री मुक्ति का सपना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2014
- जोशी, डॉ0 निर्मला–सातवें तथा आठवें दशक के महिला साहित्यकारों का कथ्य एवं शिल्प, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु लिखा गया शोध–प्रबन्ध–1996
- तिवारी, रामचन्द्र–आधुनिक हिन्दी उपन्यास, परिदृश्य प्रकाशन, मुम्बई, संस्करण–2007
- तिवारी, डॉ0 सुषमा–महिला कथाकारों के सामाजिक विचार, वीर बहादुर सिंह

कोष ग्रंथ

हिन्दी शब्द सागर–सं0 श्यामसुंदर दास, ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी।

पत्र–पत्रिकाएँ

- अकार, अकार प्रकाशन, 15/269, सिविल लाइन्स, कानपुर–208001
- अनुसंधान, अनुसंधान समिति, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज– 211002
- आजकल, संपादक–फरहत परवीन, प्रकाशन विभाग, कमरा नम्बर–601, बी, सूचना भवन, सी0जी0ओ0 काम्प्लेक्स, लोदी रोड, नयी दिल्ली–110003
- आलोचना, संपादक–अरुण कमल, राजकमल प्रकाशन, 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली–110002
- इण्डिया टुडे, संपादक–अरुण पुरी, लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, इंडिया टुडे ग्रुप मीडियाप्लेक्स, एफ.सी–8, सेक्टर 16–ए, फिल्म सिटी, नोयडा–201301
- तद्भव, संपादक–अखिलेश, 18/201, इंदिरा नगर, लखनऊ–226016, उ0प्र0।
- दस्तावेज़, संपादक–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, बेतियाहाता, गोरखपुर–273001